महिला कृषक की सफलता की कहानी एवं नारी सशक्तिकरण

कृषक का नाम	*श्रीमती बुधमनिया उरांव*
पति का नाम	*श्री बुधनाथ उरांव*
ग्राम	*कुल्ही*
पंचायत	*आंजन*
प्रखण्ड	*गुमला*
डाकघर	*टोटो*
पिन कोड	*835233*
रकबा (एकड़)	*3.0*
सिंचित	*1.0*
असिंचित	*2.0*
मोबाइल न0	*6299424415*
सदस्यता यदि किसी समुह में हो	*गुलैची महिला मण्डल, कुल्ही*
केन्द्रीय/ राजकीय स्कीम का नाम जिसमें कृषक द्वारा प्रयोग किया गया।	*एस.एम.ए.ई*

स्त्री को सृजन की शक्ति माना जाता है अर्थात स्त्री से ही मानव जाति का अस्तित्व माना गया है। इस सृजन की शक्ति को विकसित-परिष्कृति कर उसे समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता अवसर की समानता का सु-अवसर प्रदान करना ही नारी सशक्तिकरण का आशय है। अब अगर हम नारी को कृषि क्षेत्र से जोड़े तो झारखण्ड के परिपेक्ष्य में पायेंगे की हमारे यहाँ महिला ही कृषि कार्य में 80 प्रतिशत की सहभागिता है। इसी संदर्भ में हम प्रखण्ड-गुमला के ग्राम- कुल्ही, पंचायत- आंजन की महिला कृषक- बुधमनिया उरांव, उम्र- 42, एक ऐसी महिला की बात करेंगे, जिसने आज उस मकाम को छुआ है, जिसको शायद किसी और को करने में सालों साल लग जाये। कुल्ही ग्रामीण क्षेत्र की यदि बात करें तो पहले यह नकसलवाद ग्रसित क्षेत्र रहा है एवं शहर से सुदूरवर्ती इलाका होने के कारण इस क्षेत्र के कृषक पिछड़े ही रहे हैं।

इस क्षेत्र में अधिकांशतः धान की ही खेती होती थी जिससे जीवन यापन काफी मुश्किल होता था एवं जीविका के लिए उनके द्वारा ईठ भट्टा में भी काम किया जाता था। इन्होंने प्रदान से जुड़कर अपने क्षेत्र में एक महिला मंडल समुह का गठन किया। धीरे-धीरे महिला मंडल समुह सक्रिय होता गया एवं क्षेत्र की महिलाऐ उनके नेतृत्व में योजनाओं और खेती के गुर सीखते हुए जागरुक होती गई। बुधमनिया दीदी द्वारा संस्था की मदद से आम बागवानी लगवाई साथ ही उसके बीच में अंतर फसल के रुप में सब्जी बंदगोबी, फूलगोबी, मटर, आदि फसल उगाकर अच्छी आय लेने लगी। उनके द्वारा धान फसल की खेती श्री विधि से करती एवं अन्य को भी प्रेरित करती है। वर्ष 2018 से आत्मा से जुड़कर इस महिला ने समय-समय पर बी.टी.एम. गुमला द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रत्यक्षण में भाग लिया और तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया। वर्ष 2019-20 में उनके द्वारा मिर्च फसल में कृषक पाठशाला का आयोजन किया गया जिसके कारण क्षेत्र की महिलाओं ने खेती के नए तरीके को सीखा जिसे प्रखण्ड स्तर पर बी.टी.एम. एवं ए.टी.एम. द्वारा कियान्वित की गई। खेती के अलावा इनके पास 9-10 बकरी एवं 3 गाय भी है। वर्तमान में उनके पास पॉलीहॉउस में शीशम, सागवान एवं गंभार के पौधे की तैयार कर बिक्री की जा रही है।

	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	**गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के बाद**
फसल/ कृषि पद्धति	धान की छींटा विधि/ रोपा में बड़े बिछड़ा का प्रयोग, अव्यस्थित ढंग से रोपनी। मात्र गोब्बर खाद का प्रयोग	बीजोपचार को जाना, धान की छींट विधि को छोड़ा गया, रोपनी में पौधे की दुरी बनाए रखना, श्री विधि का प्रायोग। रासायनिक खाद का महत्व एवं उपयोग। धास निकोनी हेतु कोनोवीडर का प्रयोग एवं खरपतवार नाशी का प्रयोग को जाना।
फसल का उत्पादन	धान एकल फसल	धान, अरहर, उरद एवं सब्जी फसल
बिक्री मूल्य	धान : 10–12 रु/किलो	धान : 20–22 रु/किलो
पुआल (Straw)	घर में ही जानवरों के लिए उपयोग	घर में ही जानवरों के लिए उपयोग
लगत मूल्य (Input Cost)	रु.5000/– प्रति एकड़ धान फसल	धान एवं सब्जी : रु.20000/– प्रति एकड़
मजदूरी लागत	रु.5000/–	रु.7000/–
अन्य खर्च	शून्य	रु.5000/–
अंतिम बचत	रु.15000 से 20000/–	एक लाख रुपये सालाना।